**भारत और मंगोलिया के बीच आपसी तालमेल और सांझी मान्यताएं हैं - लोक सभा अध्यक्ष**

उलन बतोर (मंगोलिया) 20 अप्रैल, 2016 : लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन जो इस समय मंगोलिया में भारतीय संसदीय शिष्टमंडल का नेतृत्व कर रही हैं, ने कहा कि भारत और मंगोलिया के बीच विभिन्न मुद्दों के बारे में आपसी तालमेल और दोनों देशों की सांझी मान्यताएं हैं।

मंगोलिया के राष्ट्रपति, श्री साखियागिन एल्बेगडोर्ज के साथ मुलाक़ात के दौरान श्रीमती महाजन ने कहा कि भारत और मंगोलिया के बीच गहरे और नजदीकी रिश्ते है और इन रिश्तों को और मजबूत बनाये जाने और इन्हें नए आयाम दिए जाने की जरूरत है। इससे पहले श्रीमती महाजन ने प्रधान मंत्री, श्री सयखनबिलेग के साथ मुलाक़ात की और परस्पर हित के मुद्दों पर चर्चा की।

श्रीमती महाजन ने गवर्नमेंट पैलेस में मंगोलिया की संसद के ग्रेट हुरल के चेयरमैन, श्री जेड एन्खबोल्ड के साथ मुलाक़ात की और अनेक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। बाद में, श्री जेड एन्खबोल्ड द्वारा आयोजित भोज में श्रीमती महाजन ने कहा कि प्राचीन काल से ही भारत और मंगोलिया के बीच परस्पर संबंध रहे हैं। बीसवीं शताब्दी में एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में मंगोलिया की पहचान बनने के बाद भी दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत और विशेष रूप से बौद्ध धर्म की विरासत पर आधारित रिश्ते और भी मजबूत हुए हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र और गुट निरपेक्ष आंदोलन में मंगोलिया की सदस्यता का समर्थन किया। श्रीमती महाजन ने यह भी कहा कि आध्यात्मिक पडोसी देश, सभ्यता के ताने-बाने से जुड़े दोस्त और लोकतांत्रिक देश होने के साथ साथ आज हम एक दूसरे के महत्वपूर्ण सहयोगी और साझीदार भी हैं।

यह टिप्पणी करते हुए कि दोनों देशों के बीच साझे मूल्य और आपसी तालमेल विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक सहयोग का आधार बने हैं, श्रीमती महाजन ने कहा कि मजबूत राजनीतिक संबंधों के साथ-साथ व्यापार, अर्थव्यवस्था और निवेश में भी आपसी संबंध मजबूत होने चाहिए। उन्होंने मंगोलिया की संसद और व्यापार समुदाय से आग्रह

किया कि वे भारत की आर्थिक प्रगति से उत्पन्न अवसरों का पूरा लाभ लें। श्रीमती महाजन ने मंगोलिया की संसद के चेयरमैन को यह भी बताया कि लोकतांत्रिक संस्थाओं और राजनीतिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ बनाने के मामले में भारत की संसद को अपनी विशेषज्ञता मंगोलिया के साथ साझा करने में बहुत ख़ुशी होगी। इस संबंध में, उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि भारत की संसद का संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो ग्रेट हुरल के संसदीय स्टाफ को अपनी सेवाएं प्रदान कर सकता है।